अँधेरे में दिल के चरागे महोब्बत
ये किसने जलाया सवेरे सवेरे
लिया जब से मैंने ये नाम मुहम्मद
बड़ा लुत्फ़ आया सवेरे सवेरे

अक़ीदत की मंज़िल का बस राज़ ये है
ईशा के वुज़ू से अदा हो सहर भी
इबादत का सौदा अँधेरे अँधेरे
मुनाफा कमाया सवेरे सवेरे

खुदा की क़सम ये हकीकत है सहेरा
के बेनूर आँखों में भी नूर चमका
तेरे सब्ज़ गुम्बद को सूरज की किरणों
ने जब जगमगाया सवेरे सवेरे

इबादत किये जा, नमाज़ें पड़े जा
शबो रोज़ सजदों पे सजदे किये जा
इबादत उसी की , नमाज़ें उसी की
जिसे पंजतन का गराना मिला है

मदीने के जलवे मदीने की रातें
हमें अये खुदाया दिखा जल्दी जल्दी
तड़पते हैं दिन रात जो हुज़ूरी को
उन्हें अये खुदाया बुला जल्दी जल्दी

ख़याले मदीना में नींद आ गयी जब
क़रार आ गया बेकरारी को मेरी

किये सब्ज़ गुम्बद के मैंने नज़ारे
बड़ा लुत्फ़ आया सवेरे सवेरे

वो रोज़े का मंज़र वो मेहरबो मिम्बर
वो जन्नत की क्यारी बड़ी प्यारी प्यारी
जहाँ पर लगी मेरे आक़ा की तलियाँ
वो गलियां हमें भी दिखा जल्दी जल्दी

जिन्हें सुनके करते थे इफ्तारो सहरी
सभी माहे रमज़ान में उषाके नबवी
जिन्हें सुनके होता है एक कैफ तारी
हमें वो अज़ानें सुना जल्दी जल्दी

क़यामत का एक दिन मुअय्यन है लेकिन
हमारे लिए हर नफ़स है क़यामत
मदीने से हम जां निसारों की दूरी
क़यामत नहीं है तो फिर और क्या है

कहाँ में कहाँ ये मदीने की गलियां
ये क़िस्मत नहीं है तो फिर और क्या है
जहाँ रोज़ा-इ-पाके खैरुल वरा है
वो जन्नत नहीं है तो फिर और क्या है

मुहम्मद की अज़मत को क्या पूछते हो
के वो साहिबे काबा कौसेन ठहरे
सरे हश्र आक़ा की मेहमान नवाज़ी
ये अज़मत नहीं है तो फिर और क्या है